IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, July 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय ज्ञान परंपरा के सर्वोच्च सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्य

डॉ. धीरेन्द्र सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर–समाजशास्त्र,

हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी प्रयागराज

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसकी इस सामाजिकता ने आदिम समाज से निकलकर एक सुसंगत एवं सभ्य राष्ट्र की यात्रा तय की है। मानव के इस सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन के सफर में उसकी विवेकसम्मत दृष्टि, राजनीति चेतना इत्यादि ज्ञान के निरंतर परिमार्जीकरण का प्रतिफल है। प्रत्येक व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र की दशा एवं दिशा ज्ञान के उच्चीकरण का परिणाम है, जिससे विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं के विविधीकरण, कार्य विशेषीकरण, दक्षता, कुशलता, निष्पक्षता एवं विभिन्न मानवीय मूल्यों आदि का आविर्भाव एवं विस्तार होता है। इस संदर्भ में भारतीय भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रारम्भ से ही समृद्धशाली रही है।

मुख्य शब्द : ''वसुधैव कुटुंब, विश्व शांति, लोकतांत्रिक मूल्य, लैंगिक न्याय, विधि का शासन, सामाजिक संस्कृति, एकात्मकता, मानव कल्याण, विश्व बन्धुत्व।''

भारतीय ज्ञान की समृद्धि उसके दर्शन एवं राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं की संरचना और कार्यप्रणाली पर परिलक्षित होती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद, वैदिक साहित्य, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण और धर्मशास्त्रों का विशेष महत्व है, जो ज्ञान, विज्ञान कर्म और उपासना तथा अध्यात्म, योग आदि समस्त विषयों का मूल श्रोत है। भारतीय ज्ञान की धारा वैज्ञानिक और व्यवहारिक चिंतन पर आधारित है, जो विश्वबन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत है तथा विश्व के समस्त मानव समुदायों एवं प्राणी मात्र के कल्याण की भावनाओं से सिंचित है, इसीलिए आज भी प्रासंगिक है। महाभारत एवं पुराण काल तक वैदिक धर्म दर्शन संस्कृति की धारा का निरंतर प्रवाह होता रहा। कालंतर में विदेशियों के आक्रमण के दौरान जहाँ भारत की धन संपदा को लूटा गया, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाते हुए संस्कृत के ग्रन्थों को अपनी भाषा में अनुवाद करके भरपूर उपयोग किया।

भारत ने विश्व को सदैव अध्यात्म, विश्वबन्धुत्व, योग और आयुर्वेद का ज्ञान दिया, जिसका आज भी विश्व समुदाय द्वारा अनुकरण किया जा रहा हैं। भारतीय दर्शन 'वसुधैव कुटुम्ब' एवं सर्वजनहिताय, सर्वजन सुखाय' पर आधारित है तथा मनुष्यों का सार्वजनिक जीवन सामाजिक कल्याण के बाद अपने हितों की चिन्ता दिखायी देती है। सभी मनुष्यों में सद्आचरण एवं संयमित जीवन शैली का अनुसरण तथा परिकल्पना की गयी है। इसके साथ यहां कर्तव्य प्रधान अधिकार तथा धार्मिक जीवन जीने का दर्शन निहित है। वैश्विक कल्याण एवं वैश्विक परिवार का विचार आज अपने आप में विकसित अनेक सभ्यताओं से सर्वोच्च एवं सर्वोत्कृष्ट है। अतः भारतीय ज्ञान परंपरा स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व तथा विश्वशांति के सिद्धान्तों को स्वीकार करती है एवं

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, July 2022 Impact Factor: 6.252

सर्वोत्तम जीवन मूल्यों का मार्ग प्रशस्त करती है।

वर्तमान वैश्विक समस्याओं एवं चुनौतियों का समाधान भी हमारी वैदिक संस्कृति में विद्यमान है। जलवायु परिवर्तन, गरीबी, भुखमरी, आतंकवाद, सामाजिक मनोविदोलन सहित दुनिया के सामने उठनें वाली कई चुनौतियों का हल भारतीय संस्कृति में मौजूद है। हमारे वेद प्रकृति की पूजा और पर्यावरण संरक्षण तथा वनीकरण जैसी प्रथाओं पर जोर देते हैं।

वेदों का सबसे प्रमुख पहलू इसका दीर्घजीवन है अर्थात् लोकतांत्रिक मूल्यों की जड़े वैदिक काल में पायी जाती है, जहाँ सभा एवं समिति जैसी प्रतिनिधि प्रणालियाँ मौजूद थी। वर्तमान में वैश्विक संरचनाएं एवं संस्थायें लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत बनाने को प्रयासरत है।

संप्रति विश्व सामाजिक न्याय एवं लैंगिक न्याय के लिए संघर्षरत एवं प्रयत्नशील है। ऐसे में वैदिक काल को महिला सशक्तीकरण का काल कहा जा सकता है क्योंकि महिलाओं को पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे। वैदिक काल की कई ऐसी महिलाएं थी, जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा में अमूल्य योगदान दिया है। ऐसे ही मूल्य भारतीय ज्ञान परंपरा में शक्तिशाली संस्कृति के पोषक है। इसीलिए ब्रिटिश औपनिवेशिक राज के दौरान लोगों के सामाजिक जागृति में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना कर लोगों को 'वेदों की ओर लौटो' का आह्वान किया, जिससे भारतीय पुर्नजागरण ऊर्जावान हुआ। इस प्रकार भारतीय आजादी एवं स्वतन्त्रता में भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के मूल्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय राजनीतिक ज्ञान की परंपरा भी समृद्धिशाली रही है। महाभारत के 'शान्तिपर्व' में राजधर्म की चर्चा की गयी है, जिसमें राज्य तथा शासन के अध्ययन को राजा का धर्म कहा गया है। राजधर्म में राजा के सभी कर्तव्य और शासन सम्बन्धी बातें सम्मिलित थी, दण्डनीति को प्रशासन का शास्त्र समझा गया। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतक कौटिल्य के मतानुसार मनु वृहस्पति और शुक्राचार्य द्वारा मान्य चार विधाओं में से दण्डनीति एक है। भारतीय विचारक पहले से ही संप्रभुता को राज्य का आधार मानते हैं, उनके, मतानुसार बल प्रयोग या दण्ड के बिना कोई राज्य कायम नहीं रखा जा सकता, इस प्रकार सुव्यवस्था का दर्शन एवं विचार प्रणाली भारतीय संस्कृति का प्रारंभ से ही अंग रही है। इसीलिए 'आन्वीक्षकी', .'त्रयी' और 'वार्ता' विधाओं की सुख समृद्धि दण्ड पर निर्भर मानी गयी है, अर्थात् कानून–व्यवस्था की बुनियाद पर ही सामाजिक तथा राष्ट्रीय संवृद्धि आधारित है।

प्राचीन भारत में राजनीतिक परंपराओं या सिद्धांतों का विकास धर्म के अंग के रूप में हुआ, इसी कारण प्राचीन भारत की राजनीति में नैतिकता का समावेश रहा और धर्म का रक्षण राज्य का प्रमुख दायित्व था। राज्य का होना सामाजिक जीवन के लिए सर्वथा आवश्यक और उपयोगी है। सभी प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में राजा का कर्तव्य न्याय का प्रशासन करना है और राजा को अपनी प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। राजा के लिए यह उपदेश है कि वह अपनी प्रजा के प्रति पिता तुल्य व्यवहार करे, इसीलिए राजा के पद का ऊँचा स्थान दिया गया है। भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य के सिद्धांतों एवं दर्शन से ज्यादा राज्य की स्थूल समस्याओं पर जोर है, जो व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण को सिंचित करता है।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक परंपरा में राज्य को साध्य नहीं साधन माना गया है, जिसका कार्य था कि समाज की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में सहायक हो अर्थात राज्य को सामाजिक व्यवस्था के अधीन और उसके अन्तर्गत ही स्थान प्राप्त था। सामाजिक व्यवस्था और समाज का सर्वांगीण विकास राज्य के लिए आवश्यक है, जिसमें लोककल्याणकारी राज्य का दर्शन निहित है। राज्य से पितृवत और मातृवत व्यवहार की अपेक्षा एवं निर्देश है। प्रजाजन की चिंता तथा उसके सुख सुविधा की पूरी चिन्ता एवं ख्याल है। राज्य के प्रभुसत्ता सम्पन्न होने का दर्शन निहित है, किन्तु समुदायों के अस्तित्व को मान्यता है, जो भारत

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, July 2022 Impact Factor: 6.252

के विविधता में एकता के दर्शन को महत्व देता है। इस तरह भारतीय राजनीतिक परंपरा में लोक कल्याणकारी राज्य, कानूनी की सर्वोच्चता, विधि का शासन तथा संविधानवाद के मूल्य निहित है, जो राष्ट्रीय संवृद्धि के साथ वैश्विक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्राचीन भारत की संस्कृति मानव सभ्यता के उच्च शिखर पर वह संस्कृतिलता पुष्पित पल्लवित हुई, जिसमें एक ओर भौतिक अभिवृद्धि तथा आध्यात्मिक नवचेतना के दर्शन होते हैं, वहीं सामाजिक राजनीतिक चिन्तन में स्थायित्व, परिपक्वता तथा कल्याणकारी मार्ग का दर्शन भी दिखायी देता है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राजनीतिक चिन्तन में समन्वय शक्ति सदा से विद्यमान रही है, वर्तमान स्वरूप जो हमारे सामने है, वह अतीत और वर्तमान का सम्मिश्रण है। यह निरन्तरता और परिवर्तन का प्रतीक है, जिसमें भारतीय चिन्तन की आत्मा मौजूद है और जो सदैव विकासोन्मुख है। सदाचार और सुनीति के प्रोत्साहन से जनता में सच्ची धार्मिक भावना और सदाचार की प्रवृत्ति का संचार करना है, इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए राज्य विभिन्न धर्मों और मतों को सहायता देता था और ज्ञान–विज्ञान को प्रोत्साहित करता था। अर्थ की वृद्धि के लिए कृषि उद्योग और वाणिज्य का विकास तथा कृषि की उन्नति के लिए सिंचाई, बाँध और नहरों का प्रबन्ध तथा खानों, तालाबों, कुओं का खोदना था। काम की वृद्धि के लिए आशय यह निहित था कि देश में शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करके प्रत्येक नागरिक को बिना किसी बाधा के सब प्रकार के न्यायपूर्ण सुखों को भोगनें का अवसर दिया जाए, संगीत नृत्य, चित्रकला आदि ललित कलाओं के पोषण से देश में सुरूचि और सुसंस्कृति का विकास किया जाए। इस प्रकार भारतीय पुरूषार्थ दर्शन में मनुष्य के सर्वांगीण विकास का मूल्य निहित है।

अतः भारतीय राजनीतिक दर्शन, आदि युग से दार्शनिकों, चिन्तकों एवं विचारकों की पावन भूमि रहा है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक निरन्तर हमें इसके सामाजिक जीवन में दर्शन और धर्मसम्मत समाजशास्त्र की श्रृंखला विद्यमान दिखाई देती है। प्रत्येक विचारक की राजनीतिक मान्यताएं उसकी अपनी दार्शनिक धारणाओं से प्रभावित है। धर्म की प्रधानता के समस्त व्यवस्थाएँ–सामाजिक, नैतिक आर्थिक आदि इसी के इर्दगिर्द केन्द्रित रही है। भारत इस धरती पर एकमात्र देश है जो आधुनिक सुविधा शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को जोड़ सकता है, इसके लिए हमें प्राचीन भारतीय ज्ञान के आंतरिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए। आर्यभट्ट, चरक, शंकराचार्य, नागार्जुन, हर्षवर्धन, स्वामी विवेकानंद के साथ सैकड़ों महापुरूष हुए हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान से विश्व की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ और समृद्ध संस्कृति है। हालांकि आज के परिवेश में हर एक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है।

भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं और अपने भाव, राग और ताल से स्पन्दन उत्पन्न कर संपूर्ण विश्व को मानवता, भाईचारा और संवेदना का पारिवारिक संदेश देना चाहता है, अपनी जीवंत अमूर्त विरासत जो इसकी वैश्विक सभ्यता की विरासत है। इस विरासत से विभिन्न राष्ट्रों, समाजों तथा संस्कृतियों के बीच संस्कृति एवं सभ्यता का एक संवाद बनाने की प्रक्रिया आरंभ होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने के प्रयास करना चाहिए। सूचना के स्तर पर ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं होता बल्कि समझ, विचार एवं बुद्धि से संजाए हुए ज्ञान की प्राप्ति करना ही मानवीय पांडित्य की वास्तविक प्राप्ति तथा जीवन बोध का मूल बिन्दु कहा जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द की शिष्या निवेदिता का विश्वास था कि भारत के लोगों को भारतीय समस्या के समाधान के लिए एक भारतीय मस्तिष्क के रूप में शिक्षा प्रदान की जाए। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा कला, संस्कृति, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान व प्रबंधन समेत विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण देती है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाकर राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया को और मजबूत बनाना होगा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, July 2022 Impact Factor: 6.252

प्राचीन ग्रंथों में ज्ञान के खजाने को खोजकर, उसे सवांरकर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की आवश्यकता है।

भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं में ही वह सामर्थ्य है, जिससे भारत अकेले नहीं बल्कि पूरे विश्व को शांति के पथ पर ला सकता है। यह भारतीय ज्ञान परंपराए मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं को नियंत्रण में रख सकती है। ज्ञान का काम समाज के दर्शन को समाज कल्याण में मूर्त करना है, जबकि समाज का दर्शन ज्ञान से जुड़कर अपने आप को प्रकाशवान करना चाहता है। लोगों की आकांक्षाए, कामनाएं, आचार और व्यवहार मिलकर ही समाज बनाते हैं। इसीलिए एक सामाजिक संस्कृति पैदा करना आज की बडी जरूरत है, जो कमजोर होते, टूटते समाज को शक्ति दे सके। इसमें दो राय नहीं कि वेदों से लेकर आज के युग तक भारत की प्राणवायु धर्म है। वही हमारी चेतना का मूल है। यह धर्म ही हमारी सामाजिक संस्कृति का निर्माता है।

इस तरह कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान की परंपरा ने एक सार्वभौमिक सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन की नीव रखी, जिससे वर्तमान तकनीकी विकास के समय में भी हम मानवीय मूल्यों और आदर्शों के साथ विकास की बात करते हैं। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में भारतीय संस्कृति और वसुधैव कुटुम्ब की संकल्पना से विश्व को शांति, सौहार्द और भाईचारे का संदेश दिया जा सकता है। साथ ही यह भारतीय परंपरा अन्तर्जगत और बाह्यजगत के सूक्ष्म और विराट परिदृश्य को विश्लेषित करती है। वी0आर0 शंकरानन्द ने कहा है कि ''दुनिया आज भारतीय वैचारिक शक्ति के महत्व को समझ रही है। हमारे परिवार की परिकल्पना एवं गुरू की अवधारणा आज दुनिया को सहज आकर्षित कर रहे हैं। दुनिया में भारत अपने शास्त्र के आधार पर विशिष्ट पहचान रखता है, न कि शस्त्र के आधार पर दुनिया पर विजय की आकांक्षा रखता है।'' उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा के केन्द्रीय बिन्दु के रूप में उपस्थित एकात्मकता, संवेदनशीलता न्यूनतम आवश्यकता एवं परिपूर्णता के लिए हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम एवं शोध का अनिवार्य अंग बनाना होगा, जिससे भावी पीढ़ी को सकारात्मक दिशा प्रदान किया जा सके, जिससे वैचारिक स्वतंत्रता के केन्द्र में भारतीयता का भाव भी उत्पन्न हो सके।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 बी0के0 सरकार – 'द पॉलिटिकल इंस्टीट्यूसन्स एण्ड क्योरीज ऑफ द हिन्दूज'।
2. ए0 अवस्थी एवं रामकुमार अवस्थी : आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन (रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइन्सेज, जयपुर)।
3. बी0ए0 साल्टोरी–'एंसिएट इंडियन पॉलिटिकल थॉट एण्ड इंस्टीट्यूसन्स'।
4. बी0पी0 वर्मा – 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन'।
5. यू0एन0 घोसाल – 'ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन पॉलिटिकल आइडियाज'।
6. के0 दामोदरन – 'भारतीय चिन्तन परम्परा'।
7. विजेन्द्र पाल सिंह – 'भारतीय राष्ट्रवाद तथा आर्य समाज'।
8. प्रो0 सरोज शर्मा – 'भारतीय ज्ञान परंपरा विविध आयाम'।
9. **प्रो0 हरिशंकर पाण्डेय – भारतीय ज्ञान परंपरा विमर्श।**